कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 4

MSK-008

स्नातकोत्तर कला उपाधि कार्यक्रम

(एम. ए. संस्कृत) (एम. एस. के.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2023

एम. एस. के.-008 : संस्कृत साहित्य : गद्य, पद्य एवं नाटक

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : (*i*) इस प्रश्नपत्र में तीन खण्ड हैं।

(*ii*) सभी खण्ड करना अनिवार्य है।

(*iii*) खण्डों में दिए गए निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

खण्ड-क

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 3×10=30

(क) प्रतीपभूपैरिव किं ततोभिया,
विरुद्धधर्मैरपिभेत्तृतोज्झिता।
अमित्रजिन्मित्रजिदोजसा स यद्विचारदृक्चारदृगप्यवर्तत॥

अथवा

लताबलालास्य कलागुरुस्तरुप्रसून गन्धोत्करपश्यतोहरः।
असेवतामुं मधुगन्धवारिणि प्रणीतलीलाप्लवनो वनानिलः॥

(ख) यथेच्छाभोग्यं वो वनमिदमयं मे सुदिवसः
सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति।
तरुच्छाया तोयं यदपि तपसां योग्यमशनं
फलं वा मूलं वा तदपि न पराधीनमिह वः॥

अथवा

एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्
भिन्न पृथक्पृथगिवाश्रयते विवर्तान्।
आवर्तबुदबुदतरङ्गमयान्विकारा
नम्भो यथा, सलिलमेव हि तन्समस्तम्॥

(ग) ब्रह्मण्योऽपि ब्रह्मवित्तापहारी स्त्रीयुक्तोऽपि पायशो विपयुक्तः।
सद्वेषोऽपि द्वेषनिर्मुक्तचेताः को वा तादगदृश्यते श्रूयते वा॥

अथवा

कर्णान्तविभ्रमभ्रान्तकृष्णार्जुनविलोचना।
करोति कस्य नाह्लादं कथा कान्तेव भारती॥

खण्ड-ख

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 4×10=40

(क) श्रीहर्ष की भाषाशैली पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'नैषधीयचरितम्' के प्रथम सर्ग के आधार पर राजा नल की विशेषताओं को लिखिए।

(ख) 'उत्तररामचरितम्' के कथानक को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

अथवा

भवभूति की नाट्यकला पर प्रकाश डालिए।

(ग) महाश्वेता की चारित्रिक विशेषताओं को अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

महाकवि बाणभट्ट की रचनाओं का विस्तृत वर्णन कीजिए।

(घ) संस्कृत साहित्य में चम्पूकाव्य के उद्भव और विकास पर लेख लिखिए।

अथवा

त्रिविक्रमभट्ट के व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर प्रकाश डालिए।

खण्ड-ग

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** गद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 2×15=30

(क) आलोकमात्रेणैवापगतश्रमो दृष्टवा मनस्येवमकरोत्-अद्ये ! निष्फलमपि मे

तुरगमुखमिथुनानुसरणम् एतदालोकयतः सरः सफलतामुपगतम् अद्य परिसमाप्तमीक्षणयुगलस्य द्रष्टव्यदर्शनफलम् आलोकितः खलु रमणीयानामन्तः, दृष्ट आह्लाद् नीयानामवधिः वीक्षिता मनोहराणां सीमान्तलेखा प्रत्यक्षीकृता प्रीतिजनानां परिसमाप्तिः विलोकिता दर्शनीयानामवसानभूमिः।

अथवा

(ख) ततोऽवतीर्य तरुशाखायां बद्धवा तुरङ्गम् उपसृत्य भगवते भक्त्या प्रणम्य त्रिलोचनाय, तामेव दिव्ययाषितमेशपक्ष्मणां निश्चलानिबद्धलक्ष्येण चक्षुषा पुनर्निरूपयामास। उदपादि चास्य तस्या रूपसम्पदा कान्त्या प्रशान्त्या चाविर्भूतविस्मस्य मनसि-अहो ! जगति जन्तूनामसमर्थितोपनतान्या पतन्ति वृत्तान्तराणि।

अथवा

(ग) कृतातिथ्या च तथा द्वितीयशिलातलोपविष्टया क्षणमिव तूष्णी स्थित्वा क्रमेण परिपृष्टो दिग्विजयआदारभ्य किन्नरमिथुनानुसरणप्रसङ्गनागमन-आत्मनः सर्वमाचचक्षे विदितसकलवृत्तान्ता चोत्थाय सा कन्यका भिक्षाकपालमादाय तेषामायतनतरूणां तलेषु विचचार।